विज्ञान और अध्यात्म

- डॉ. देवबाला

इस संसार में जितनी भी चीजें है, उनके दो विभाग साफ-साफ दिखाई देते हैं। एक तरह की चीजें वे हैं जिन्हें अपने होने का ज्ञान नहीं है। दूसरी वे हैं जिन्हें अपने होने को ज्ञान है। यह एक ऐसा अन्तर है जिसे जानने के लिये किसी सबूत की जरूरत नहीं और न ही इस सच्चाई से इन्कार किया जा सकता है। आपके आसपास जो भी पदार्थ हैं उन सब में यह भेद आप स्पष्ट अनुभव कर सकते हैं। मेज, कुर्सी, चश्मा, मोबाइल, कम्प्यूटर, टी. वी. आदि सारी चीजें अपना अस्तित्व (existence) रखती हैं, किन्तु उन्हें अपने अस्तित्व का, अपने होने का ज्ञान नहीं है। कुर्सी यह महसूस नहीं कर सकती कि ''मैं हूं'' और मेरे उपर कोई बैठा हुआ है। किन्तु आपके आसपास मौजूद कुत्ता, बिल्ली चींटी आदि प्राणी अपने होने को भी महसूस करता है और यह भी महसूस करते है कि मेरे आसपास में कोई दूसरा है।

प्रश्न उठता है कि वह कौन सा तत्व (element) है जो इन चीजों में अंतर कर देता है। कहा जा सकता है कि वह अंतर ज्ञान का अंतर है। पर फिर प्रश्न यह है कि ज्ञान और ज्ञान को धारण करनेवाली सत्ता एक ही है। या अलग अलग है। ''यह चीज लाल रंग की है'' यह ज्ञान किसको हो रहा है जो इस ज्ञान को समझ रहा है तो हमें समझना चाहिये कि ब्रेन (brain)के लगभग गुण कम्प्यूटर में अब डाल दिये गये हैं, पर कम्प्यूटर बहुत सारी सूचनाऐं अपने अंदर रखते हुए भी यह नहीं जानता कि ''मैं यह ज्ञान रखता हूं'' उसे अपने ज्ञान का ज्ञान नहीं है और न ही अपने होने का ज्ञान है, इसलिये वहां आत्मा नहीं है।

विचार करने योग्य बात यह है कि हम कि अपने आसपास दिखनेवाली ज्ञान रहित जड़ (non-living) चीजों के बारे में ज्ञान प्राप्त करें या अपने बारे में कि मैं कौन हूं, मेरा स्वरूप क्या है, क्योंकि हमें अपने होने का तो ज्ञान है कि ''मैं हूं'' किन्तु हमें यह ज्ञान नहीं है कि मैं कैसा हूं? कितनी विचित्र बात है कि दुनियां भर की चीजों के बारे ज्ञान प्राप्त करने वाला तत्व अपने स्वरूप का ज्ञान नहीं रखा इससे भी विचित्र बात यह है कि वह तत्व दुनियां भी की चीज के बारे में जानने की इच्छा करता है पर स्वयं अपने बारे में जानने की इच्छा क्यों नहीं करता?

यहीं पर विज्ञान और अध्यात्म के बीच चुनाव का प्रश्न उठता है। आधुनिक विज्ञान संसार की उन चीजों की खोज कर रहा है जो अपना ज्ञान नहीं रखती लेकिन ज्ञानवान सत्ताओं के लिये उपयोगी है। जैसे दुनियां में एक अंगूर नाम का फल है, उसे मनुष्य ने कभी देखा, चखा और स्वादिष्ट पाया और फिर लम्बे अनुभव के बाद यह स्पष्ट हुआ कि यह स्वास्थ्यकारक भी यह ज्ञान पाना सरल था किन्तु अंगूर को हर मौसम में उपजाया जा सके, बीज वाले अंगूर और बिना बीज वाले अंगूर के रस से कुछ और चीजें भी बनाई जा सकें, इत्यादि बातों की खोज आधुनिक विज्ञान का विषय है, दुनियां की हर चीज के बारे में विज्ञान खोज में लगा हुआ है पर जो यह खोज कर रहा है खोजने के बाद ''मैंने यह ज्ञान प्राप्त कर लिया'' ऐसा ज्ञान अनुभव कर रहा है, उस अनुभव करने वाले की खोज आधुनिक विज्ञान का विषय नहीं है। सोचना यह है कि महत्वपूर्ण क्या है? दुनियां की जड़ चीजों का ज्ञान या चेतन तत्व का ज्ञान इन दोनों में से किसी एक को जकड़ कर पकड़ लेने से हम समग्रता की ओर नहीं बढ़ सकते। संसार में दो तरह के अतिवादी (extremist) हैं। एक वे जो कहते हैं कि संसार और उसके रसीले

पदार्थ ही एकमात्र सत्य है, उन्हे ही पाने और उपभोग करने की कोशिश करनी चाहिये, आत्मा-वात्मा सब बेकार की बातें हैं। दूसरे वे लोग जो कहते हैं कि संसार तो बेकार है, झूठ है, मिथ्या है, आत्मा ही एकमात्र सत्य है, उसे ही जानने की कोशिश करनी चाहिये।

संसारवादों या उपभोगवादों, आत्मा को भूल जाते हैं और आत्मवादी संसार की उपेक्षा करते हैं। उपभोगवादी, आत्मज्ञान के अपार आनन्द से वंचित रह जाते हैं और आत्मवादी संसार के सुख से। दोनों ही अधूरे हैं। अध्यात्मिकता और भौतिकता में कोई विरोध नहीं है, क्योंकि दोनों ही सत्य है। मनुष्य को भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति और उनको अधिक से अधिक उपयोगी बनाने के लिये भी प्रयास करना होगा, पर साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि ये जड़ वस्तुऐं जीवन का साधन है साध्य नहीं है। इसके अलावा यह भी समझना होगा कि अध्यात्म का अर्थ केवल अपने आत्मतत्व की खोज और आत्मिक आनंद की प्राप्ति ही नहीं है बल्कि यह भी बोध इसमें शामिल है कि इस संसार में मैं ही एक अकेला आत्म नहीं हूं, दूसरे आत्मा, दूसरे प्राणी भी हैं, उनको भी मेरी तरह सुख दुःख का अनुभव होता है। इसलिए संसार के पदार्थों में दूसरे प्राणियों का भी हिस्सा है। अतः मै अन्याय से दूसरों के हिस्से की चीजें न लूं और न ही किसी को दुख पहुंचाऊं। यदि ऐसी अध्यात्मिकता का विकास नहीं हो रहा तो इस एहसास को न रखनेवाले लोग वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग दूसरों को पराजित करने और संसार की सारी चीजों पर कब्जा जमाने में करने लगेंगे और फिर संघर्ष का परिणाम होगा पूर्ण विनाश। इसलिए आज यह अत्यन्त आवश्यक है कि विज्ञान ओर अध्यात्म में समन्वय स्थापित किया जाये।

About the Author

Dr. Mrs. Devbala Ramanathan, Siddhant Bhushan – Dr. Mrs. Devbala, M.D., F.A.C.O.G. along with the practice of Obstetrics and Gynecology in New York, is a tireless preacher of Vedic Sanatan Dharma in NY, N.J. and Connecticut areas. After earning Siddhant Bhushan credentials in 2005, she has become a very sought after speaker by various Hindu organizations in North America. She is a gifted musician, writer and poet. Dr. Devbabla is the able daughter of Late Sh. Dharamjit Jigyasu Ji. She currently runs the Dropadi Jigyasu Ashram in Flushing, New York.

।। अन्योअन्यमभिहर्यत ।।
एक दूसरे से प्रेम करो
Love one another